आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 5 March 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा - *आज मैं पन और मेरे पन से पूरी तरह मुक्त होने का पुरुषार्थ करे*

बाबा हमारे जीवन को पूर्णतया डिवाइन बनाने आया है। ताकि हम **हीरों एक्टर** बनकर इस संसार में बाबा का महान कार्य कर सके।

हमारे साथ **शिवबाबा** और ब्रह्मा बाबा दो महान हसतियाँ रहते है। शिवबाबा तो है ही सर्वोच्च। ब्रह्मा बाबा भी बहुत महान बने। हम उन्हें फाॅलो करते है।

ब्रह्मा बाबा नम्बर वन आत्मा बने इसका एक प्रमुख आधार यह है, यद्यपि अनेक आधार है। जैसे कि वो सबसे बड़े **योगी त्यागी** थे। लेकिन मैं और मेरे पन से पूरी तरह मुक्त हुए।

हमें भी उनको फॉलो करना है। बाबा के अंदर लेश मात्र भी नहीं था कि .... मैं यज्ञ का मालिक हूँ, या मेरे द्वारा बाबा बहुत बड़ा कार्य कर रहे है।

नहीं ...। बाबा करा रहे है। **मैं पन और मेरा** ....। मेरा यज्ञ, मेरा परिवार, मैंने धन दिया, मैने इस यज्ञ को स्थापित किया ... इन सबसे वो पूरी तरह मुक्त थे।

हम भी अपने जीवन को यदि डिवाइन बनाना चाहते है तो पूरी तरह स्वयं को मै और मेरे पन से मुक्त कर दे। यह मैं और मेरा पन गहरी जड़े मनुष्य के अंदर जमाये हुए है।

और जो मैं मैं करता है वह वकरी की तरह निर्वल हो जाता है। उसकी सेवाओं में भी वल नहीं भरता। उसकी स्थिति में भी वल नहीं भरता है।

तो आईये हम चेक करे हमारे अंदर कहाँ कहाँ मैं पन और मेरा पन है? मेरा परिवार मेरी सेवा मेरे बच्चे मेरी धन-सम्पत्ति मेरा बिजनेस मेरा मकान ...

इसतरह की कई मेरे पन रहता है मनुष्य के अंदर। मैं बड़ा, मैं घर का मालिक, मैं बहुत बुद्धिमान, मैं सेवाओं में बहुत सफलता पाई, मैं बहुत अनुभवी हूँ, मेरा समाज में बहुत सम्मान है, मैं बड़ा हूँ तो मेरे आज्ञा के विना कुछ भी काम नहीं होना चाहिए।

यह मैं और मेरा मनुष्य के मन में बहुत गहराई तक जमा रहता है। और जो इन दोनों से मुक्त हो जाये वही बहुत डिवाइन होता है। उसमें दिव्यता आ जाती है।

तो सभी को बहुत अच्छी तरह से अभ्यास करना चाहिए अनुभवों के साथ ....

" यह मेरी शक्तियों से सेवा नहीं हो रही है .. बाबा की शक्तियों से हो रही है .. मेरी शक्तियों से सफलता नहीं मिल रही है .. बाबा की यह गिफ्ट है "

हम सेवाओं में सफल इसलिए हो रहे है कि यह ईश्वरीय ज्ञान हमारे साथ है। यह परमात्म वरदान हमारे साथ है। और उसके द्वारा दिए गए टैलेन्ट्स हमारे साथ है। सफलता का भी वरदान उसने ही दिया है।

जो इसतरह इन सभी मनोविकारों से मुक्त रहकर सेवा करते है, अपने घर को चलाते है, अपने लौकिक अलौकिक उन्नति करते है, वो निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहता है।

और जहाँ मैं और मेरा है वही परेशानियाँ है। वहीं व्यर्थ का प्रकोप है। वहीं मनुष्य को उदासी निराशा हताशा पैदा होती है। लेकिन ...

" मेरा कुछ भी नहीं सबकुछ तेरा .. तेरा ही दिया हुआ है .. और तुझ को अर्पित "

जैसे बाबा ने कर दिया मै पन का त्याग ...

" आई एम नाथिंग .. बाबा .. यूँ आर एवरीथिंग "

ऐसे ही हम कर दे। मैं मैं की गीत न गाये। अपनी महिमा का गुणगान न करते रहे।

" बाबा ... बाबा "

लेकिन कहीं कहीं आत्मायें बाबा के गुणगान करते हुए अपना भी गुणगान करने लगती है। इससे ईश्वरीय वल समाप्त हो जाता है। प्रभाव फ़ीका पड़ जाता है। **प्रत्यक्षता** में देर होती है।

तो आईये आज सारा दिन हम अभ्यास करे .....

" सबकुछ तेरा .. मेरा कुछ भी नहीं "

जो भक्ति में गाते आये .." क्या लगे मेरा "

अब उसका **स्वरुप** हमें बनना है।

और आज सारा दिन बार-बार बापदादा का आह्वान करेंगे। बाबा को बुलायेंगे और **फ़ील** करेंगे ....

" बापदादा अपना धाम छोड़कर नीचे हमारे पास आ गये .. हमारे सिर पर हाथ रख दिया "

और यह फीलिंग भी

" बच्चे .. मैं हूँ .. मेरी शक्तियाँ तुम्हारे साथ है .. मेरे वरदान तुम्हारे साथ है "

तो आज सारा दिन बापदादा का आह्वान करते हुए योग का परम सुख प्राप्त करेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org